دُعَآءُ خَتْمِ الْقُرْاٰنِ

اَللّٰهُمَّ ارْحَمْنِیْ بِالْقُرْاٰنِ الْعَظِیْمِ وَاجْعَلْهُ لِیْ اِمَامًا وَّنُوْرًا وَّهُدًی وَّرَحْمَةً اَللّٰهُمَّ ذَكِّرْنِیْ مِنْهُ مَانَسِیْتُ وَعَلِّمْنِیْ مِنْهُ مَاجَهِلْتُ وَارْزُقْنِیْ تِلَاوَتَهٗٓ اٰنَآءَ الَّیْلِ وَاَطْرَافَ النَّهَارِ وَاجْعَلْهُ لِیْ حُجَّةً یَّارَبَّ الْعٰلَمِیْنَ اٰمِیْنَ

अ़लामातुल वक़्फ़

o येह वक़्फ़े ताम या'नी ख़त्मे आयत की अ़लामत है जो दर ह़क़ीक़त गोल ते (ۃ) है जिसे दाइरे (0) की शक्ल में ज़ाहिर किया जाता है। यहां ठहरना चाहिए लेकिन ऊला और ग़ैर ऊला की तर्जीह़ का ख़याल रख्खें, या'नी ऐसी जगह पर वक़्फ़ करें जहां अ़लामत क़वी हो जैसे (م) और (ط) अगर (لا) हो तो ठहरने या न ठहरने का इख़्तियार है।

م मीम — वक़्फ़े लाज़िम की अ़लामत है जहां ठहरना ज़रूरी है और अगर ठहरा न जाए तो मा'नामें फ़र्क़ पड़ जाता है जिस से बा'ज़ मवाक़े' पर कुफ़्र लाज़िम आता है।

ط तोय — वक़्फ़े मुत्लक़ की अ़लामत है, यहां ठहरना बेहतर है।

ج जीम — वक़्फ़े जाइज़ की अ़लामत है, ठहरना बेहतर है, न ठहरना भी जाइज़ है।

ز ज़े — वक़्फ़े मुजव्वज़ की अ़लामत है, यहां न ठहरना बेहतर है।

ص सॉद — यहां वक़्फ़ करने की रुख़्सत है, अलबत्ता मिला कर भी पढ़ा जा सक्ता है।

ق क़ाफ़ — कील अ़लैहिल वक़्फ़ का मुख़फ़्फ़फ़ है, यहां न ठहरना बेहतर है।

صلے सॉद लाम या अल वस्लु ऊला का मुख़फ़्फ़फ़ है, यहां मिला कर पढ़ना बेहतर है।

صل सल — येह कद यूसल का मुख़फ़्फ़फ़ है, यहां वक़्फ़ करना बेहतर है।

قف (क़िफ़) — येह वक़्फ़े बेहतर की अ़लामत है, यहां ठहर कर आगे पढ़ना चाहिए।

س یا سکته (सीन या सक्ता) अ़लामते सक्ता है यहां इस तरह़ ठेहरा जाए कि साँस टूटने न पाए या'नी बिग़ैर साँस लिए ज़रा सा ठेहरें।

وقفة (वक़्फ़ा) — सक्ते को ज़रा तूल दिया जाए और सक्ते की निस्बत ज़ियादा ठेहरें लेकिन साँस न टूटे।

لا (ला) — येह अ़लामत कहीं दाइरए आयत के ऊपर आती है और कहीं मत्नमें, मत्न के अंदर हो तो हरगिज़ नहीं ठेहरना चाहिए अगर दाइरए आयत के ऊपर हो तो इसमें इख़्तिलाफ़ है बा'ज़ के नज़दीक ठेहरना चाहिए और बा'ज़ के नज़दीक नहीं ठेहरना चाहिए लेकिन ठेहरने और न ठेहरने से मतलबमें कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता।

ک (काफ़) — कज़ालिक की अ़लामत है, या'नी जो अ़लामत पहले आई वोही यहां समझी जाए।

फज़ाइल व आदाबे कुरआन

(1) हज़रते अबू हुरैरा رضي الله عنه से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व-सल्लम ने फ़रमाया :

ما أَذِنَ اللهُ لِشَيءٍ ماأَذِنَ لِنَبِيٍّ حَسَنِ الصَّوتِ يَتَغنَّى بالْقُرآنِ يَجْهَرُ بِهِ.

(بخاری، **الصحیح**، کتاب التوحید، باب قول النبی ﷺ: الماهر بالقرآن مع السفرة الكرام البررة، ٦:٢٧٤٣، رقم: ٧١٠٥- **مسلم، الصحيح**، كتاب صلاة المسافرين، باب استحباب تحسين الصوت بالقرآن، ١:٥٤٥، رقم: ٧٩٢)

"अल्लाह तआ़ला ने किसी शय के लिए ऐसा हुक्म नहीं दिया जिस क़दर ताकीद के साथ (अपने महबूब) नबी ﷺ को खूब सूरत लेहजे और नग़मगी के साथ ब-आवाज़े बुलन्द कुरआन पढ़ने का हुक्म फ़रमाया है।"

(2) हज़रते अबू हूरैरा رضي الله عنه से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ ने फ़रमाया :

لَيْسَ مِنَّا مَنْ لَمْ يَتَغَنَّ بِالْقُرْآنِ. (بخاری، **الصحیح**، کتاب التوحید، باب قول الله تعالى و أسرّوا قولكم أو اجهروا به، ٦:٢٧٣٧، رقم: ٧٠٨٩)

" वोह शख़्स हम में से नहीं जो कुर्आन मजीद को नग़मगीवाली खूब सूरत आवाज़ के साथ नहीं पढ़ता।"

(3) हज़रते सा'द इब्ने वक़ास رضي الله عنه से रिवायत है कि मैंने हुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ को फ़रमाते हुए सुना :

إِنَّ هَذَا الْقُرآنَ نَزَلَ بِحُزْنٍ، فَإِذَا قَرَأْتُمُوهُ فَابْكُوا، فَإِنْ لَمْ تَبْكُوا، فَتَبَاكَوا وَتَغَنَّوْا بِهِ، فَمَنْ لَمْ يَتَغَنَّ بِالْقُرْآنِ فَلَيْسَ مِنَّا.

(**ابن ماجة، السنن**، كتاب إقامة الصلاة والسنة فيها، باب في حسن الصوت بالقرآن، ١:٤٢٤، رقم: ١٣٣٧)

" बेशक येह कुरआन ग़म से लबरेज़ नाज़िल हुआ है पस जब तुम इसे पढ़ो तो रोया करो, और अगर (शक़ावते क़ल्बी के बाइस) रो न सको तो (कम अज़ कम) रोने वाली हालत ही बना लिया करो और नग़मगी के साथ खुश इल्हानी से इसकी तिलावत किया करो पस जो हुस्ने सौत और नग़मगी के साथ कुरआन की तिलावत नहीं करता वोह हम में से नहीं है।"

(4) हज़रते अबू उमामा رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ ने फ़रमाया :

اقْرَؤُوا الْقُرْآنَ فَإِنَّهُ يَأْتِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ شَفِيْعًا لِأَصْحَابِهِ.

(**مسلم، الصحيح**، كتاب صلاة المسافرين، باب فضل قراءة القرآن و سورة البقرة، ١:٥٥٣، رقم: ٨٠٤)

"कुरआन मजीद पढ़ा करो कि येह क़ियामत के दिन अपने पढ़नेवालों के लिए शफ़ाअ़त करनेवाला बन कर आएगा।"

(50) हुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ ने फ़रमाया :

يَا ابْنَ عَبَّاسٍ إِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ فَرَتِّلْهُ تَرْتِيلًا بَيِّنْهُ تَبْيِينًا وَ لَا تَنْثُرْهُ نَثْرَ الدَّقَلِ وَ لَا تَهُذَّهُ هَذَّ الشِّعْرِ قِفُوْا عِنْدَ عَجَائِبِهِ وَ حَرِّكُوْا بِهِ الْقُلُوْبَ وَ لَا يَكُوْنَنَّ هَمُّ أَحَدِكُمْ آخِرَ السُّوْرَةِ. (ديلمى، الفردوس بمأثور الخطاب، ٥: ٣٦١، رقم: ٨٤٣٨)

" ऐ इब्ने अ़ब्बास ! जब तुम क़ुरआ़न पढ़ो तो उसको ठेहर ठेहर कर और अल्फ़ाज़ो हुरूफ़ को ख़ूब वाज़ेह़ कर के पढ़ा करो और उसको रद्दी खजूर के बिखेरने की तरह़ न बिखेर दिया करो और न ही उसे जल्दी से शे'र गोई की तरह़ पढ़ा करो उसके अ़जाइबात पर तवक़्क़ुफ़ किया करो और उसके ज़रीए़ अपने दिलों को ह़रकत दिया करो और तुम में से किसी का भी इरादा सिर्फ़ आख़िरी सूरत तक पहुंचने का नहीं होना चाहिए (कि जल्द ख़त्मे क़ुरआ़न हो जाए बल्कि उसको ग़ौरो फ़िक्र और तदब्बुर के साथ पढ़ा करो)."

(6) ह़ज़रते अ़ली बिन अबी तालिब رضی اللہ عنہ से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ ने फ़रमाया :

مَنْ قَرَأَ الْقُرْآنَ وَاسْتَظْهَرَهُ فَأَحَلَّ حَلَالَهُ وَحَرَّمَ حَرَامَهُ أَدْخَلَهُ اللهُ بِهِ الْجَنَّةَ وَشَفَّعَهُ فِي عَشَرَةٍ مِنْ أَهْلِ بَيْتِهِ كُلُّهُمْ قَدْ وَجَبَتْ لَهُ النَّارُ.

(ترمذى، السنن، كتاب فضائل القرآن، باب ما جاء فى فضل قارى القرآن، ٥: ١٧١، رقم: ٢٩٠٥)

" जिस शख़्सने क़ुरआ़ने ह़कीम पढ़ा और उसे ह़िफ़्ज़ कर लिया, उसकी ह़लाल कर्दह चीज़ों को ह़लाल और ह़राम कर्दह चीज़ों को ह़राम समझा,अल्लाह तआ़ला उस (क़िराअतो इ़ल्मे क़ुरआ़न) की वजह से उसे जन्नत में दाख़िल कर देगा और उसके ख़ानदान के दस ऐसे अफ़राद के ह़क़ में (भी) उसकी शफ़ाअ़त क़ुबूल करेगा जिनके लिए दोज़ख़ वाजिब हो चुकी होगी"।

مَنْ قَرَأَ حَرْفًا مِنْ كِتَابِ اللهِ فَلَهُ بِهِ حَسَنَةٌ، وَالْحَسَنَةُ بِعَشْرِ أَمْثَالِهَا، لاَ أَقُوْلُ الٓمٓ حَرْفٌ، وَلَكِنْ أَلِفٌ حَرْفٌ، وَلاَمٌ حَرْفٌ، وَمِيْمٌ حَرْفٌ.

(ترمذي، السنن، كتاب فضائل القرآن، باب ماجاء فيمن قرأ حرفا من القرآن ما له من الأجر، ٦:١٧٥، رقم: ٢٩١٠)

(7) ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : " जिस ने अल्लाह तआ़ला की किताब से एक ह़र्फ़ पढ़ा,उस के लिये उस-के बदले में एक नेकी है और येह एक नेकी दस नेकियों के बराबर है, मैं नहीं केहता के अलिफ लाम मीम एक ह़र्फ़ है बल्कि अलिफ एक ह़र्फ़ है, लाम एक ह़र्फ़ है और मीम एक ह़र्फ़ है, (गोया सिर्फ अलिफ लाम मीम पढ़ने से तीस नेकियां मिल जाती हैं)।"

(8) ह़ज़रते उ़स्मान (बिन अ़फ़्फ़ान) ﷺ से रिवायत है के हुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ ने फरमाया :

خَيْرُكُم مَنْ تَعَلَّمَ الْقُرْآنَ وَعَلَّمَهُ.

(بخاري، الصحيح، كتاب فضائل القرآن، باب خيركم من تعلم القرآن وعلمه، ٤:١٩١٩، رقم: ٤٧٣٩، ٤٧٤١)

'' तुम में से बेहतर वोह शख़्स है जो क़ुरआ़न (पढ़ना और उस के रुमूज़ो असरार और मसाइल) सीखे और सिखाए।''

(9) ह़ज़रते अबूज़र ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ ने मुझे फरमाया :

يَا أَبَا ذَرٍّ لَأَنْ تَغْدُوَ فَتَعَلَّمَ آيَةً مِنْ كِتَابِ اللهِ، خَيْرٌ لَكَ مِنْ أَنْ تُصَلِّيَ مِائَةَ رَكْعَةٍ. وَ لَأَنْ تَغْدُوَ فَتَعَلَّمَ بَابًا مِنَ الْعِلْمِ، عُمِلَ بِهِ أَوْلَمْ يُعْمَلْ، خَيْرٌ مِنْ أَنْ تُصَلِّيَ أَلْفَ رَكْعَةٍ.

(ابن ماجة، السنن، المقدمة، باب فضل من تعلم القرآن و علمه، ١:٧٩، رقم: ٢١٩).

'' अय अबूज़र ! बेशक तुम सुब्ह को जा कर अल्लाह तआला की किताब की एक आयत सीख लो तो येह तुम्हारे लिये सौ रकआ़त नमाज़ पढने से बेहतर है और अगर इ़ल्म का एक बाब सीख लो उस बाब पर अ़मल किया जाना या न किया जाना अलग बात है (जिस पर अलग जज़ा व सज़ा होगी) मगर (क़ुरआन के एक बाब का फ़क़त इ़ल्म सीख लेना ही) तुम्हारे लिये एक हज़ार रकआ़त नमाज़े (नफिल) से बेहतर है।''

(10) ह़ज़रते इब्ने उ़मर ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ ने फरमाया :

إِنَّ الَّذِي لَيْسَ فِي جَوفِهِ شَيْءٌ مِنَ الْقُرْآنِ، كَالْبَيْتِ الْخَرِبِ.

(ترمذي، السنن، كتاب فضائل القرآن ، باب ماجاء فيمن قرأ حرفا من القرآن ما له من الأجر، ٥:١٧٧، رقم: ٢٩١٣)

'' वोह शख़्स जिस के दिल में क़ुरआने करीम का कुछ हिस्सा भी नहीं वोह वीरान घर की तरह है।''

(11) ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह ﷺ से रिवायत है वोह फरमाया करते थे :

إِنَّ هَذَا الْقُرْآنَ مَأْدُبَةُ اللهِ فَمَنْ دَخَلَ فِيْهِ فَهُوَ آمِنٌ

(دارمي، السنن، ٢: ٥٢٥، رقم: ٣٣٢٢)

बेशक येह क़ुरआन अल्लाह तआ़ला का दस्तरख़्वान है पस जो इस दस्तरख़्वान में शामिल हो गया उसे अम्न नसीब हो गया।''

(12) ह़ज़रत अबूज़र ﷺ से रिवायत है वोह फरमाते हैं :

قُلْتُ يَا رَسُوْلَ اللهِ أَوْصِنِي؟ قَالَ: أُوْصِيْكَ بِتَقْوَى اللهِ فَإِنَّهُ رَأْسُ الْأَمْرِ كُلِّهِ. قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ زِدْنِي قَالَ: عَلَيْكَ بِتِلَاوَةِ الْقُرْآنِ وَ ذِكْرِ اللهِ فَإِنَّهُ نُورٌ لَكَ فِي

الْأَرْضِ، وَ ذُخْرٌ لَکَ فِي السَّمَاءِ. (ابن حبان، الصحيح، ٢:٧٧-٧٨، رقم: ٣٦١)

'' मैंने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! मुझे कोई नसीहत फरमाएं,आप ﷺ ने फरमाया: मैं तुम्हें अल्लाह तआला के ख़ौफ़ व तक़वा की वसिय्यत करता हूं के यही सारे मुआ़म्ले की अस्ल है मैंने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! मुझे कुछ मज़ीद इरशाद फरमाएं, फरमाया : तिलावते कुर्आन ज़ररूर किया करो के येह ज़मीन में तुम्हारे लिये नूर और आस्मानों में तुम्हारे वास्ते (अज्रो सवाब का) ज़ख़ीरा होगा।''

(१३) ह़ज़रते जाबिर رضی اللہ عنہ हुजूर नबिय्ये अकरम ﷺ से रिवायत करते हैं कि आप ﷺ ने फरमाया :

الْقُرْآنُ شَافِعٌ مُشَفَّعٌ وَمَاحِلٌ مُصَدَّقٌ، مَنْ جَعَلَهُ أَمَامَهُ قَادَهُ إِلَى الْجَنَّةِ، وَ مَنْ جَعَلَهُ خَلْفَ ظَهْرِهِ سَاقَهُ إِلَى النَّارِ. (ابن حبان، الصحيح، ١:٣٣١، رقم: ١٢٤)

'' कुर्आन रोज़े कियामत शफाअ़त करने वाला है जो मक़बूल होगी और अल्लाह तआला बंदए ना फरमान का शिकवा करने वाला है जो सुना जाएगा, जिस-ने उस-ने अपना इमाम बनाया येह उसे जन्नत में ले जाएगा और जिस-ने उसे पसे पुश्त डाल दिया येह उसे जहन्नम की तरफ हांक कर ले जाएगा।''

(१४) ह़ज़रते अब्दुल्लाह बिन उ़मर رضی اللہ عنہما से रिवायत करते हैं कि हुजूर नबिय्ये अकरम ﷺ ने फरमाया :

يُقَالُ لِصَاحِبِ الْقُرْآنِ: إِقْرَأْ وَارْتَقِ وَ رَتِّلْ كَمَا كُنْتَ تُرَتِّلُ فِي الدُّنْيَا، فَإِنَّ مَنْزِلَتَکَ عِنْدَ آخِرِ آيَةٍ تَقْرَأُ بِهَا.

(ترمذی، السنن، كتاب فضائل القرآن، باب ماجاء فيمن قرأ حرفا من القرآن ما له من الأجر، ٥:١٧٧، رقم: ٢٩١٤)

''कुर्आन मजीद पढने वाले से (जन्नत में) कहा जाएगा : कुर्आन पढता जा और जन्नत में मंज़िल ब मंज़िल ऊपर चढता जा और यूं तरतील से पढ, जैसे तू दुनिया में तरतील किया करता था, तेरा ठिकाना जन्नत में वहां पर होगा जहां तू आख़री आयत की तिलावत खत्म करेगा।''

(१५) ह़ज़रते अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि हुजूर नबिय्ये अकरम ﷺ ने फरमाया :

يَجِيءُ صَاحِبُ الْقُرْآنِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، فَيَقُولُ (الْقُرْآنُ): يَا رَبِّ، حَلِّهِ فَيُلْبَسُ تَاجَ الْكَرَامَةِ، ثُمَّ يَقُولُ: يَا رَبِّ، زِدْهُ، فَيُلْبَسُ حُلَّةَ الْكَرَامَةِ، ثُمَّ يَقُولُ: يَا رَبِّ، ارْضَ عَنْهُ، فَيَرْضَى عَنْهُ، فَيُقَالُ لَهُ: اقْرَأْ وَارْقَ، وَ تُزَادُ بِكُلِّ آيَةٍ حَسَنَةً.

(ترمذي، السنن، كتاب فضائل القرآن، باب ماجاء فيمن قرأ حرفا من القرآن ما له من الأجر، ٥:١٧٨، رقم: ٢٩١٥)

'' रोज़े क़ियामत साहिबे क़ुर्आन (क़ुर्आन पढने और अ़मल करने वाला) आएगा तो क़ुर्आन कहेगा : अय रब! इसे ज़ेवर पेहना, तो साहिबे क़ुर्आन को इ़ज़्ज़त का ताज पेहनाया जाएगा, क़ुर्आन फिर कहेगा : अय मेरे रब ! इसे और भी पेहना, तो इसे इ़ज़्ज़तो बुज़ुर्गी का लिबास पहना दिया जाएगा, फिर कहेगा : अय मेरे मौला ! अब इस से राज़ी हो जा (इस की तमाम ख़ताएं मुआफ़ कर दे) तो अल्लाह तआला उस से राज़ी हो जाएगा और उस से कहा जाएगा : क़ुर्आन पढता जा और (जन्नत के ज़ीने) चढता जा और अल्लाह तआला हर आयत के बदले में उस की नेकी बढाता जाएगा।''

(16) हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन बुरीदा असलमी رضی اللہ عنہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं उन्होंने फरमाया के हुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ ने फरमाया :

مَنْ قَرَأَ الْقُرْآنَ وَ تَعَلَّمَهُ وَ عَمِلَ بِهِ أُلْبِسَ يَومَ الْقِيَامَةِ تَاجًا مِنْ نُورٍ ضَوْؤُهُ مِثْلُ ضُوْءِ الشَّمْسِ، وَ يُكْسَى وَالِدَيْهِ حُلَّتَانِ لَا يُقَوَّمُ بِهِمَا الدُّنْيَا. فَيَقُولَانِ بِمَ كُسِينَا هَذَا؟ فَيُقَالُ: بِأَخْذِ وَلَدِكُمَا الْقُرْآنَ. (حاكم، المستدرك، ١:٧٥٦، رقم: ٢٠٨٦)

'' जिस ने क़ुर्आन पढा, उस का इ़ल्म हासिल किया और उस पर अ़मल पैरा हुवा उसे क़ियामत के दिन नूर का एक ताज पेहनाया जाएगा जिस की रौशनी सूरज की रौशनी की तरह होगी और उस के वालिदैन को दो ऐसे हुल्ले (लिबास) पेहनाए जाएंगे के सारी दुनिया भी उन की क़ीमत के बराबर न होगी तो वोह अ़र्ज़ करेंगे हमें येह लिबास किस वजह से पेहनाया गया है ? तो उन्हें जवाब दिया जाएगा : इस लिये के तुम्हारे बेटे ने क़ुर्आन पढा और उस पर अ़मल किया था।''

(17) हज़रते इ़म्रान बिन हुसीन رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि :

أَنَّهُ مَرَّ عَلَى قَاصٍ وَ فِي رِوَايَةٍ عَلَى قَارِىءٍ يَقْرَأُ، ثُمَّ سَأَلَ فَاسْتَرْجَعَ ثُمَّ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: مَنْ قَرَأَ الْقُرْآنَ فَلْيَسْأَلِ اللهَ بِهِ، فَإِنَّهُ سَيَجِيءُ أَقْوَامٌ يَقْرَءُوْنَ الْقُرْآنَ يَسْأَلُونَ بِهِ النَّاسَ.

(ترمذي، السنن، كتاب فضائل القرآن، باب ماجاء فيمن قرأ حرفا من القرآن ما له من الأجر، ٥:١٧٩، رقم: ٢٩١٧)

'' वोह एक क़ुर्आनी वाक़िआ़त को बयान करने वाले और दूसरी रिवायत में है कि एक क़ारिए क़ुर्आन के पास से गुज़रे जो क़ुर्आन पढता था फिर लोगों से मांगता था, उन्हों ने ''इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊ़न''पढा और फरमाया : मैंने हुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ को फरमाते सुना है जो क़ुर्आन पढे, उसे क़ुर्आन के वसीले से सिर्फ अल्लाह तआला ही से सवाल करना चाहिये क्यूंकि अ़नक़रीब कुछ (ऐसे बदबख़्त) लोग पैदा होंगे जो क़ुर्आन पढेंगे और उस के इवज़ लोगों से माल मांगेगे।''

(18) हज़रते इब्ने अ़ब्बास ﷺ रिवायत करते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फरमाया :

مَنْ قَالَ فِي الْقُرْآنِ بِغَيْرِ عِلْمٍ فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ.

(ترمذي، السنن، كتاب تفسير القرآن، باب ما جاء في الذي يفسر القرآن برأيه، ٥:١٩٩، رقم: ٢٩٥٠)

'' जो शख़्स बगैर इल्म के कुर्आने मजीद पर गुफतगू करे तो उसे चाहिय्ये के वोह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले.''

(19) हज़रते अबू हुरयरा ﷺ से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया :

مَنْ قَرَأَ عَشْرَ آيَاتٍ فِي لَيْلَةٍ لَمْ يُكْتَبْ مِنَ الْغَافِلِيْنَ. (حاكم، المستدرك، ١:٧٤٢، رقم: ٢٠٤١)

'' जो बंदा रात को दस आयत पढ ले वोह (यादे इलाही से) गाफिल होने वालों में नहीं लिखा जाएगा (बल्कि आ़बेदीन में लिखा जाएगा)।''

(20) हज़रते इब्ने अ़ब्बास ﷺ बयान करते हैं :

مَنِ اسْتَمَعَ إِلَى آيَةٍ مِنْ كِتَابِ اللهِ كَانَتْ لَهُ نُورًا.

(دارمي، السنن، ٢:٥٣٦، رقم: ٣٣٦٦-٣٣٦٧)

'' जिस-ने किताबुल्लाह की एक आयत भी गौर से सुनी तो येह आयत उस-के लिये (ब-मंझिलए) नूर होगी।''

(21) हज़रते आइशा رضی اللہ عنہا रिवायत करती हैं कि :

كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ إِذَا مَرِضَ أَحَدٌ مِنْ أَهْلِهِ، نَفَثَ عَلَيْهِ بِالْمُعَوِّذَاتِ.

(مسلم، الصحيح، كتاب السلام ، باب رقية المريض بالمعوذات و النفث، ٤:١٧٢٣، رقم: ٢١٩٢)

'' जब रसूलुल्लाह ﷺ के अहले ख़ाना में से कोई बीमार होता तो आप ﷺ कुल अऊ़जु बिरब्बिल फलक और कुल अऊ़जु बिरब्बिन्नास पढ कर उस पर दम फरमाते।''

(22) हज़रते सलाम या'नी इब्ने अबी मुती' बयान करते हैं के हज़रते क़तादा ﷺ बयान किया करते थे :

أُعْمُرُوْا بِهِ قُلُوْبَكُمْ وَاعْمُرُوْا بِهِ بُيُوتَكُمْ قَالَ: أُرَاهُ يَعْنِي الْقُرْآنَ.

(دارمي، السنن، ٢:٥٣٠، رقم: ٣٣٤٢)

'' कुर्आन के ज़रिये अपने दिलों और घरों को आबाद किया करो।''

(23) हज़रते अब्दुल्लाह बिन उ़मर रदियल्लाहु अन्हुमा हुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ से रिवायत करते हैं :

الْقُرْآنُ أَحَبُّ إِلَى اللهِ مِنَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَ مَنْ فِيْهِنَّ.

(دارمي، السنن، ٢:٥٣٣، رقم: ٣٣٥٨)

'' बेशक कुर्आन अल्लाह तबारक व तआला को आस्मानों और ज़मीन और जो कुछ उन में है से ज़ियादा प्यारा है।''

सूरतों की फेहरिस्त

सूरत नम्बर	नाम सूरत	सफ़हा नम्बर	ज़मानए नुज़ूल	पारह नम्बर
१	अल फ़ातिहा		मक्की	१
२	अल ब-क़रह		म-दनी	१,२,३
३	आले इमरान	७३	म-दनी	३,४
४	अन निसा	११३	म-दनी	४,५,६
५	अल माइदाह	१५६	म-दनी	६,७
६	अल अन्आ़म	१८८	मक्की	७,८
७	अल आ़'राफ़	२२५	मक्की	८,९
८	अल अनफ़ाल	२६५	म-दनी	९,१०
९	अत तौबह	२८०	म-दनी	१०,११
१०	यूनुस	३१०	मक्की	११
११	हूद	३३२	मक्की	११,१२
१२	यूसुफ़	३५५	मक्की	१२,१३
१३	अर रअ़द	३७७	म-दनी	१३
१४	इब्राहीम	३८६	मक्की	१३
१५	अल हिज्र	३९५	मक्की	१३,१४
१६	अन नहल	४०७	मक्की	१४
१७	बनी इसराईल	४३०	मक्की	१५
१८	अल कहफ़	४४९	मक्की	१५,१६
१९	मरयम	४७०	मक्की	१६
२०	ताहा	४८३	मक्की	१६
२१	अल अंबिया	५०२	मक्की	१७
२२	अल ह़ज्ज	५१७	म-दनी	१७
२३	अल मु'मिनून	५३३	मक्की	१८
२४	अन नूर	५४७	म-दनी	१८
२५	अल फ़ुरक़ान	५६४	मक्की	१८,१९
२६	अश शुअ़रा	५७६	मक्की	१९
२७	अन नम्ल	५९५	मक्की	१९,२०
२८	अल क़सस	६१०	मक्की	२०

सूरत नम्बर	नाम सूरत	सफ़हा नम्बर	ज़मानए नुज़ूल	पारह नम्बर
२९	अल अन्कबूत	६२७	मक्की	२०,२०
३०	अर रूम	६३९	मक्की	२१
३१	लुक़्मान	६४८	मक्की	२१
३२	अस सजदह	६५५	मक्की	२१
३३	अल अहज़ाब	६५९	म-दनी	२१,२२
३४	सबा	६७५	मक्की	२२
३५	फ़ातिर	६८६	मक्की	२२
३६	यासीन	६९५	मक्की	२२,२३
३७	अस साफ़्फ़ात	७०५	मक्की	२३
३८	सॉद	७१९	मक्की	२३
३९	अज़ ज़ुमर	७२९	मक्की	२३,२४
४०	अल मु'मिन	७४३	मक्की	२४
४१	हामीम अस सज्दह	७५७	मक्की	२४,२५
४२	अश शूरा	७६७	मक्की	२५
४३	अज़ ज़ुख़रुफ़	७७७	मक्की	२५
४४	अद दुख़ान	७८९	मक्की	२५
४५	अल जासियह	७९४	मक्की	२५
४६	अल अहक़ाफ़	८०१	मक्की	२६
४७	मुहम्मद	८०८	म-दनी	२६
४८	अल फ़त्ह़	८१६	म-दनी	२६
४९	अल हुजुरात	८२४	म-दनी	२६
५०	काफ़	८२८	मक्की	२६
५१	अज़ ज़ारियात	८३३	मक्की	२६,२७
५२	अत तूर	८४०	मक्की	२७
५३	अन नज्म	८४४	मक्की	२७
५४	अल क़मर	८५१	मक्की	२७
५५	अर रह़्मान	८५६	मक्की	२७
५६	अल वाक़िअ़ह	८६२	मक्की	२७

सूरत नम्बर	नाम सूरत	सफहा नम्बर	झमानए नुझूल	पारह नम्बर
५७	अल ह़दीद	८६९	म-दनी	२७
५८	अल मुजादलह	८७७	म-दनी	२८
५९	अल ह़श्र	८८२	म-दनी	२८
६०	अल मुम्तह़िनह	८८७	म-दनी	२८
६१	अस सफ	८९१	म-दनी	२८
६२	अल जुमुअ़ह	८९४	म-दनी	२८
६३	अल मुनाफ़िक़ून	८९६	म-दनी	२८
६४	अत तग़ाबुन	८९९	म-दनी	२८
६५	अत तलाक़	९०२	म-दनी	२८
६६	अत तह़रीम	९०५	म-दनी	२८
६७	अल मुल्क	९०९	मक्की	२९
६८	अल क़लम	९१३	मक्की	२९
६९	अल ह़ाक़्क़ह	९१८	मक्की	२९
७०	अल मआ़रिज	९२३	मक्की	२९
७१	नूह़	९२६	मक्की	२९
७२	अल जिन्न	९३०	मक्की	२९
७३	अल मुज़ ज़म्मिल	९३४	मक्की	२९
७४	अल मुद दस्सिर	९३६	मक्की	२९
७५	अल क़ियामह	९४१	मक्की	२९
७६	अद दह्र,अल इन्सान	९४४	म-दनी	२९
७७	अल मुर्सलात	९४७	मक्की	२९
७८	अन नबा	९५२	मक्की	३०
७९	अन नाज़िआ़त	९५५	मक्की	३०
८०	अ़बस	९५९	मक्की	३०
८१	अत तकवीर	९६२	मक्की	३०
८२	अल इन्फ़ितार	९६५	मक्की	३०
८३	अल मुतफ़्फ़िफ़ीन	९६६	मक्की	३०
८४	अल इन्शिक़ाक़	९६९	मक्की	३०
८५	अल बुरूज	९७१	मक्की	३०

सूरत नम्बर	नाम सूरत	सफहा नम्बर	झमानए नुझूल	पारह नम्बर
८६	अत तारिक़	९७३	मक्की	३०
८७	अल आ'ला	९७४	मक्की	३०
८८	अल गाशियह	९७६	मक्की	३०
८९	अल फ़ज्र	९७८	मक्की	३०
९०	अल बलद	९८१	मक्की	३०
९१	अश शम्स	९८३	मक्की	३०
९२	अल लैल	९८४	मक्की	३०
९३	अद दुहा	९८६	मक्की	३०
९४	अ़लम नशरह	९८८	मक्की	३०
९५	अत्तीन	९८८	मक्की	३०
९६	अल अलक़	९८९	मक्की	३०
९७	अल क़द्र	९९१	मक्की	३०
९८	अल बय्यिनह	९९१	मक्की	३०
९९	अज़ ज़िल्ज़ाल	९९३	म-दनी	३०
१००	अल आ़दियात	९९३	मक्की	३०
१०१	अल क़ारिअ़ह	९९४	मक्की	३०
१०२	अत तकासुर	९९५	मक्की	३०
१०३	अल अ़स्र	९९६	मक्की	३०
१०४	अल हुमज़ह	९९७	मक्कि	३०
१०५	अल फील	९९७	मक्की	३०
१०६	क़ुरैश	९९८	मक्की	३०
१०७	अल माऊ़न	९९८	मक्की	३०
१०८	अल कौसर	९९९	मक्की	३०
१०९	अल काफ़िरून	१०००	मक्की	३०
११०	अन नस्र	१०००	म-दनी	३०
१११	अल लहब	१००१	मक्की	३०
११२	अल इख़्लास	१००१	मक्की	३०
११३	अल फ़लक़	१००२	मक्की	३०
११४	अन नास	१००२	मक्की	३०

सर्टीफिकेट सिहते मत्न

तस्दीक़ की जाती है के हमने इस क़ुर्आने ह़कीम के मतन को ह़र्फन ह़र्फन ब-नज़रे ग़ाइर पढ़ा है और इस की किताबत और प्रुफ़ चेक किए हैं, बिह़मदिल्लाहि तआ़ला येह हर क़िस्म की ग़लती से मुबर्रा है।

हाफिज़ क़ारी ह़कीम मुह़म्मद यूनुस मुजद्दिदी
प्रुफ़ रीडर फ़रीदे मिल्लत रिसर्च इन्स्टी टयूट

अल हाफ़िज़ क़ारी मुह़म्मद शफ़ीक़ुल्लाह अजमल
प्रुफ़ रीडर रजिस्टर्ड मोह़कमए औक़ाफ़
ह़ुकूमते पंजाब,लाहौर.

अर्ज़े नाशिर

इरफ़ानुल क़ुरआन का उर्दू तरजुमा हिन्दी रस्मुल ख़त (लिपि) में पेश करने के लिए हमने इ़रफ़ानुल क़ुरआ़न के लाहौर के नुस्ख़े ही से अ़रबी मत्न का अ़क्स ले कर इस नुस्ख़े में इस्ते'माल करते हुए उर्दू तरजुमे को हिन्दी रस्मुलख़त (देवनागरी लिपि में) पेश करने की निहायत ही मोहतात कोशिश की है। और इसे ग़लतियों से पाक रखने की पूरी जद्दोजहद की है।

हम ने हर मुम्किन कोशिश की है कि इस क़ुरआ़ने ह़कीम की तबाअ़त (Printing) और जिल्द बन्दी (Binding) में किसी क़िस्म की कोई ग़लती न हो इस के बावजूद अगर किसी क़ारी को कोई ग़लती या कमी बेशी नज़र आए तो इदारे को मुत्तला' करके मम्नून फरमाएं।

मिन्हाजुल क़ुरआ़न इन्टरनेशनल इन्डिया के सदरे मोहतरम सैयद नादेअ़ली इब्ने ह़सनअ़ली साहब की निगरानी में इरफ़ानुल क़ुरआन - हिन्दी की इशाअ़त का काम मुकम्मल हुआ।

ग़ुलामराज़िक़ इब्ने ख़लीलुर्रहमान शेख़
नाज़िमे तबाअ़तो इशाअ़त
मिन्हाजुल क़ुरआ़न इन्टरनेशनल इन्डिया
ट्रस्ट रजिस्ट्रेशन नंबर : 0157